चूहा

और व्हेल

विलियम, हिंदी : विदूषक

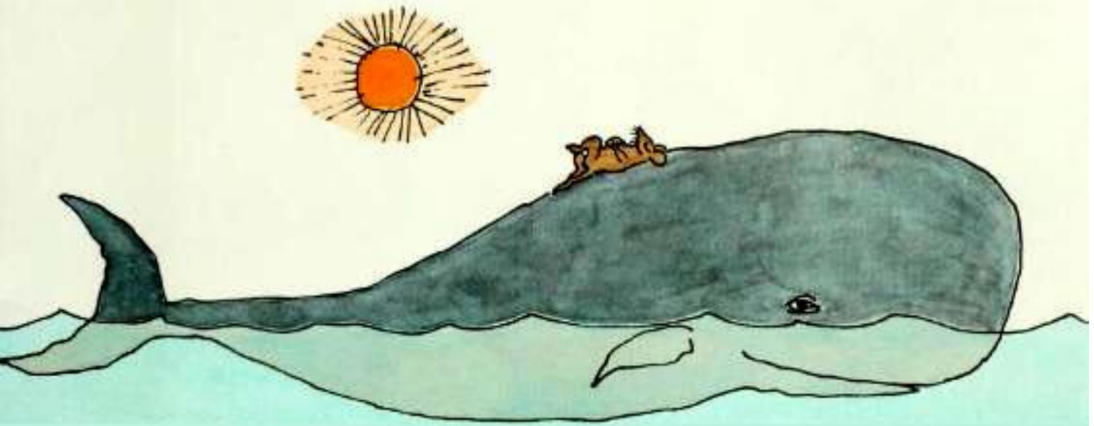

चूहा और व्हेल

विलियम, हिंदी : विदूषक

अमोस नाम का एक चूहा समुद्र के किनारे रहता था. उसे समुद्र से बहुत प्रेम था. उसे समुद्र की नमकीन हवा बहुत अच्छी लगती थी. उसे लहरों की आवाज़, उनका बड़े पत्थरों से टकराना और छोटे गोल पत्थरों का लुढ़कना भी बहुत अच्छा लगता था.

उसने समुद्र के बारे में बहुत कुछ सोचा था. समुद्र के उस पार, कैसी दुनिया होगी वो उस बारे में बहुत सोचता था. फिर एक दिन उसने समुद्र के किनारे एक नाव बनाना शुरू की. दिन के समय वो नाव का निर्माण करता और रात में नौ-विज्ञान के बारे में पढ़ाई करता.

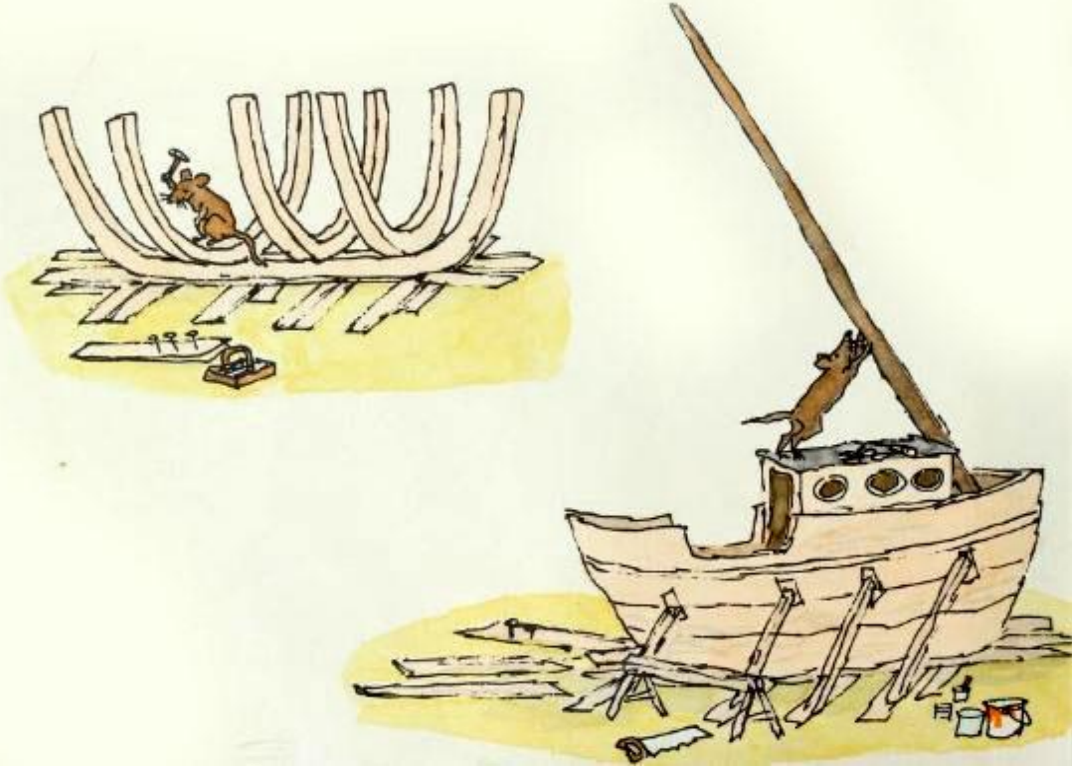

जब अमोस की नाव बनकर तैयार हुई फिर उसने उसमें पनीर, बिस्कुट, अखरोट, शहद, गेहूं, दो ड्रम पीने का पानी, एक कंपास, सेक्सटैन्ट, दूरबीन, आरी, हथौड़ा, कीलें और मरम्मत के कुछ औज़ार रखे. उसने पाल की मरम्मत के लिए सुई-धागा भी रखा. उसने एक फर्स्ट-ऐड किट भी रखी जिसमें पट्टी और आयोडीन शामिल थे. अंत में उसने खेलने एक लिए एक फिरकी और ताश के पत्ते भी रखे.

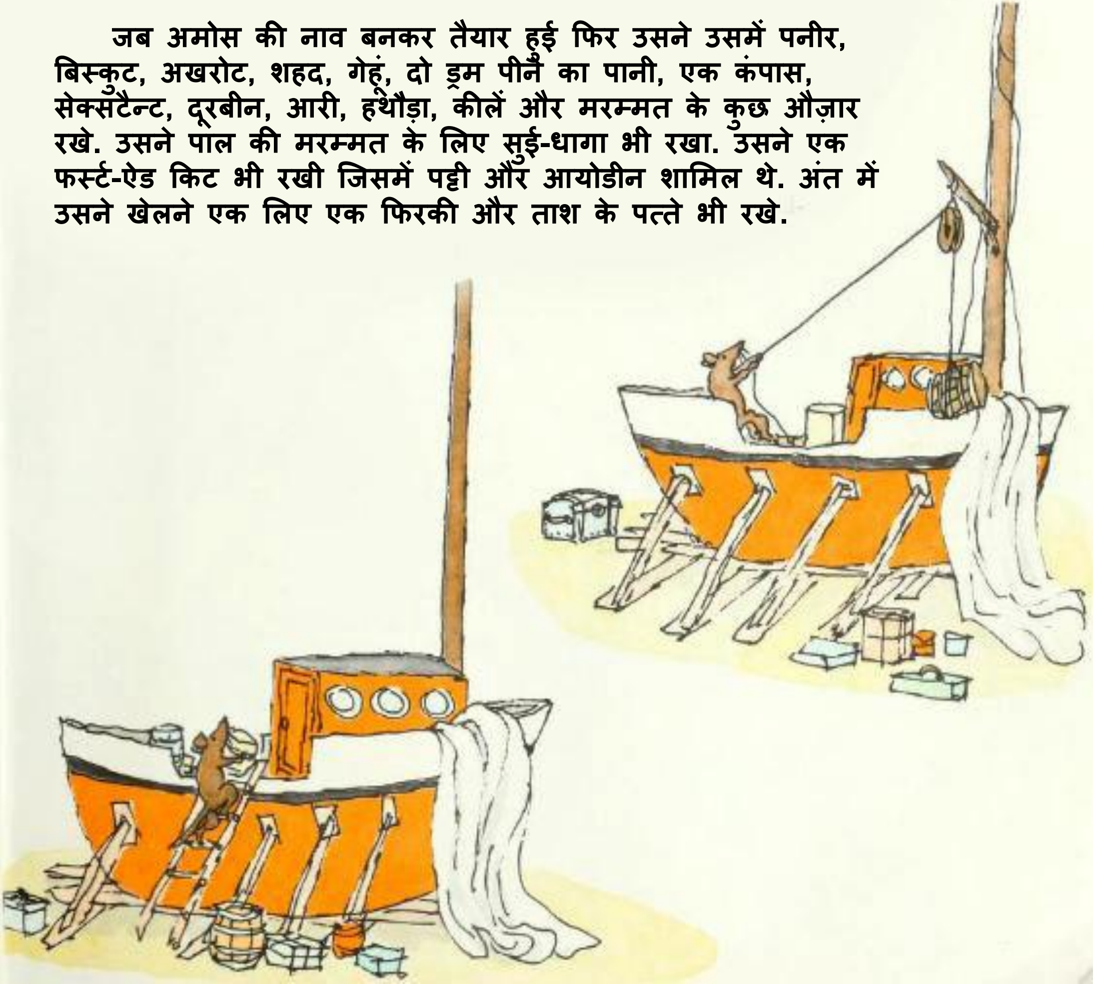

6 सितम्बर को, समुद्र बहुत शांत था. तब उसने ज्वार-भाटे के आने का इंतज़ार किया. जब समुद्र उफान पर था तब उसने लहरों की ताकत का इस्तेमाल करके अपनी नाव को पानी में ढकेला. फिर वो नाव में चढ़ा और उसने पाल तानी.

अमोस की नाव का नाम था *"रोडेंट"*. वो नाव बहुत मज़बूत और समुद्र के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी. पहले दिन अमोस की हालत कुछ ख़राब हुई और उसका मन मिचलाया, पर उसके बाद उसने एक अच्छे नाविक जैसे नाव की बागडोर संभाली.

उसे यात्रा में बहुत आनंद आ रहा था. मौसम बहुत सुहाना था. दिन-रात, रात-दिन वो पहाड़ जैसी ऊंची लहरों पर सवार होकर ऊपर-नीचे आगे बढ़ता था. अमोस अचरज कर रहा था, उसे जीवन से अथाह प्रेम था.

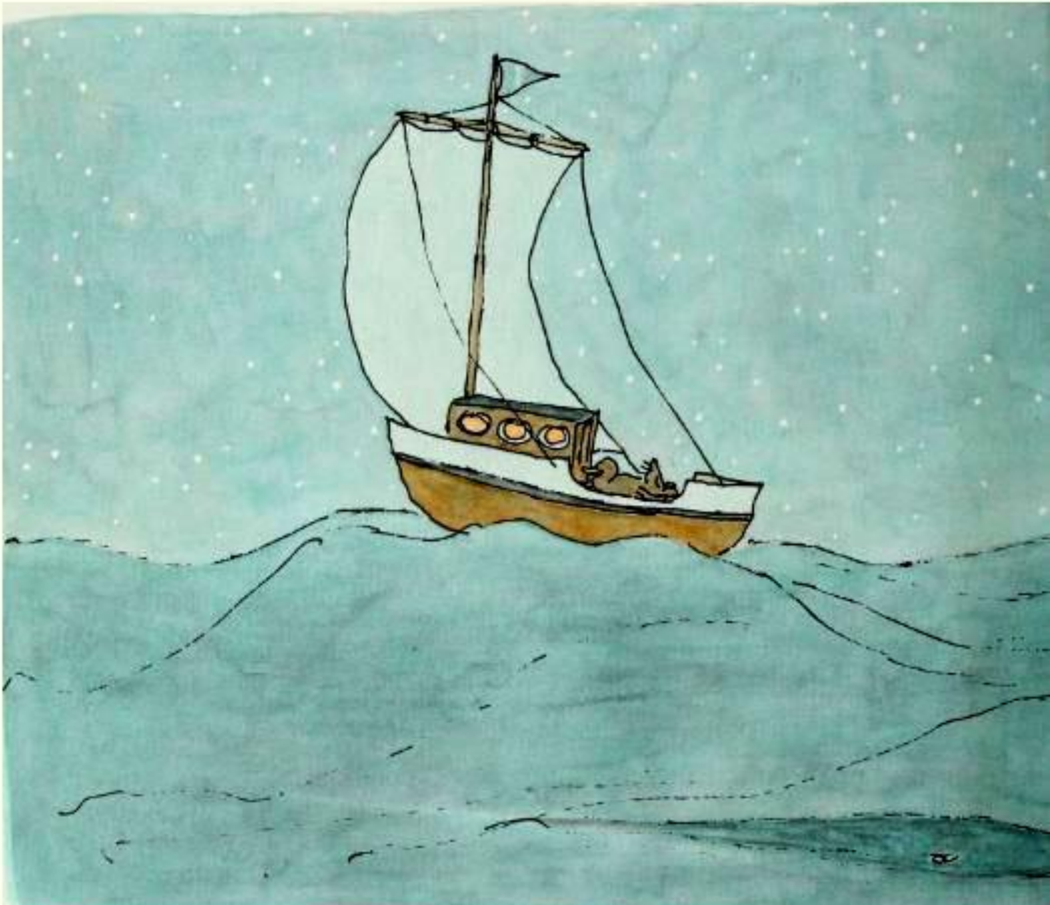

एक रात को जब समुद्र की सतह फॉस्फोरस के कणों से चमक रही थी तो उसने कुछ व्हेलों को चमकीले पानी के फव्वारे हवा में छोड़ते हुए देखा. उसके बाद वो छोटा सा चूहा अपनी नाव में लेट गया और तारों भरे आसमान को घूरता रहा, निहारता रहा. वो इस विशाल ब्रह्माण्ड में एक छोटा सा जीव था, एक धूल के कण जितना नगण्य था. वो दुनिया की सुन्दरता और उसके रहस्य से ओतप्रोत होकर नाव में बाएं-से-दाएं लुढ़कने लगा. नतीजा क्या हुआ? लुढ़कते हुए वो नाव के एक किनारे से सीधे समुद्र में जाकर गिरा!

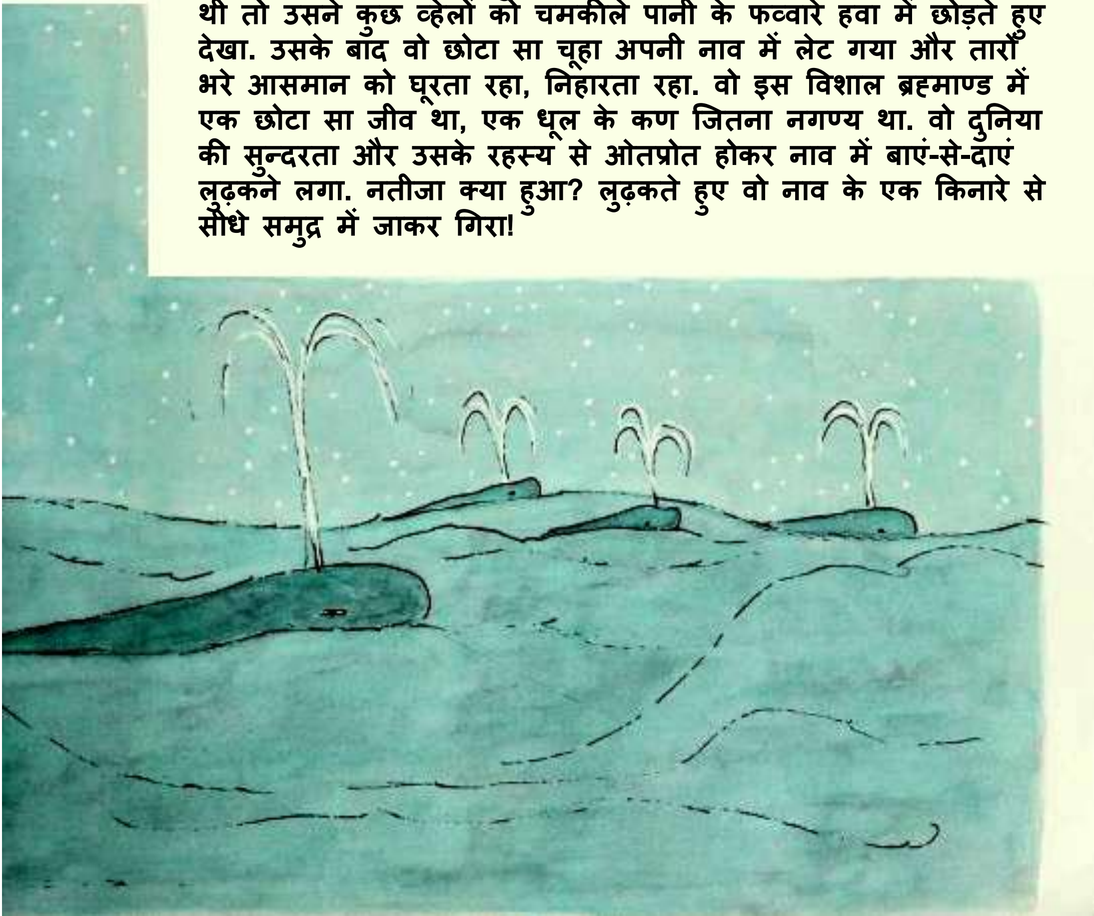

"बचाओ!" वो चिल्लाया और उसने अपनी नाव *"रोडेंट"* को कसकर पकड़ने की कोशिश की. पर नाव से उसकी पकड़ छूट गई. हवा के जोर से नाव समुद्र में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ी. उसके बाद उसने अपनी प्यारी नाव को, दुबारा फिर कभी नहीं देखा.

और वहां अमोस था! कहाँ? उस विशाल महासागर के मध्य में, सबसे करीबी तट से कोई हज़ार मील दूर. जहाँ तक उसकी निगाह जाती, उसे सिर्फ पानी-ही-पानी नज़र आता. सहारे के लिए कोई लकड़ी की टहनी तक नहीं थी. “क्या मैं अकेले ही तैरने की कोशिश करूं?” शायद वो एक-दो मील भर तैर पाए, पर हज़ार मील तो हरगिज़ नहीं. फिर उसने अपनी पीठ के बल तैरने का निश्चय किया. वो उम्मीद लगाए रहा – शायद कोई अदृश्य ताकत आकर उसे बचा ले? वो खुद की सुरक्षा के लिए क्या करे? यह उसे भी नहीं पता था.

जैसा हमेशा होता है, कुछ समय बाद सुबह हुई. अब तक अमोस काफी थक चुका था. अब वो एक बहुत छोटा, ठंडा, गीला और परेशान चूहा था. अभी भी उसे दूर-दूर तक पानी के अलावा और कुछ नज़र नहीं आ रहा था. उसकी परेशानी और बढ़ी क्योंकि तभी तेज़ बारिश शुरू हो गई.

कुछ देर बाद बारिश थमी और फिर तेज़ सूरज चमका. उससे अमोस को कुछ गर्मी ओर राहत ज़रूर मिली. उसका अकेलापन भी थोड़ा कम हुआ. पर अब उसमें बिल्कुल ताकत नहीं बची थी. अब वो डूबने के बारे में सोचने लगा. क्या डूबने में बहुत वक्त लगेगा? क्या बहुत परेशानी होगी और सांस घुटने लगेगी? क्या मेरी आत्मा स्वर्ग जाएगी, या नरक में? क्या वहां पर और चूहे होंगे?

वो खुद से यह डरावने प्रश्न पूछ रहा था. तभी एक बड़ा सर पानी में से बाहर निकला और उसने अमोस को देखा. वो एक व्हेल का सर था. “तुम किस तरह की मछली हो?” व्हेल ने उससे पूछा. “तुम मुझे बहुत अनूठे लगते हो!”

“मैं मछली नहीं हूँ,” अमोस ने कहा. “मैं एक चूहा हूँ, एक स्तनपाई जीव हूँ और प्रकृति का बहुत विकसित नमूना हूँ. मैं ज़मीन पर रहता हूँ.”

“अरे वाह!” व्हेल ने कहा. “मैं खुद एक स्तनपाई हूँ और समुद्र में रहती हूँ. तुम मुझे बोरिस बुला सकते हो,” उसने कहा.

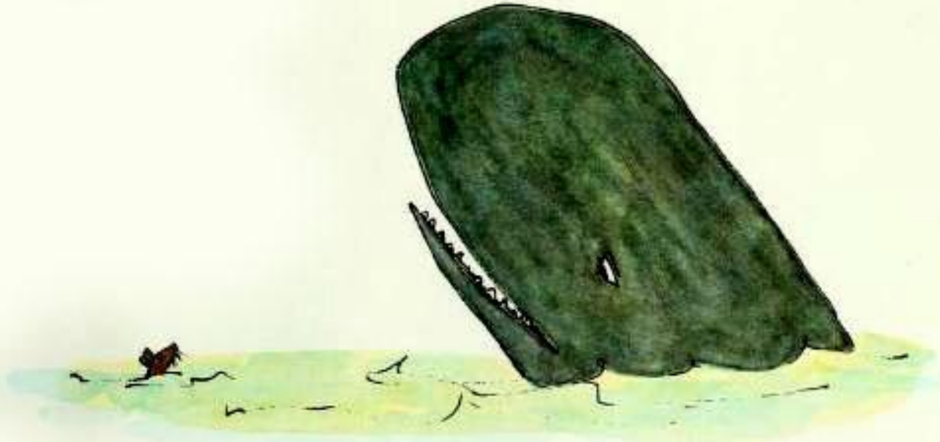

उसके बाद अमोस ने अपना पूरा परिचय दिया ओर बोरिस को बताया कि कैसे वो समुद्र के मध्य में आ पहुंचा था. व्हेल ने कहा कि वो अमोस को अफ्रीका के देश - आइवरी कोस्ट के तट तक ले जाएगी. बोरिस, वहां व्हेलों की एक बैठक में भाग लेने के लिए जा रही थी. उस मीटिंग में दुनिया के सभी समुद्रों की व्हेलें आने वाली थीं. पर अमोस ने कहा कि वो बहुत थक चुका था और अब उसमें इतनी लम्बी यात्रा करने की ताकत नहीं बची थी. उसने व्हेल से विनती की कि वो उसे वापिस उसके घर पहुंचा दे और फिर वो मीटिंग में जाए.

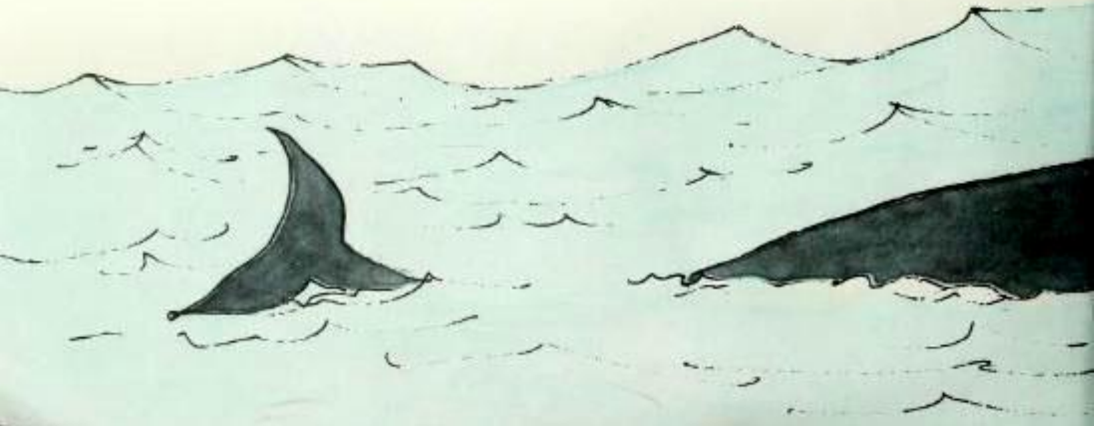

“मैं तुम्हारी ज़रूर मदद करूंगी,” बोरिस ने कहा. “यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी. बताओ किस व्हेल को, तुम जैसे अनूठे प्राणी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ होगा! आओ, मेरी पीठ पर चढ़ जाओ.” फिर अमोस, बोरिस की पीठ पर चढ़ गया.

“क्या तुम्हें पक्का पता है कि तुम एक स्तनपाई प्राणी हो?” अमोस ने पूछा. “तुम्हारे शरीर से तो मछली की खुशबू आ रही है.” उसके बाद बोरिस व्हेल तैरने लगी, और उसकी पीठ पर अमोस चूहा बैठा रहा.

अब कितनी राहत थी! अब अमोस खुदको दुबारा सुरक्षित महसूस कर रहा था! फिर अमोस व्हेल की पीठ पर लेट गया. वो थककर पस्त हो गया था. धूप की गर्मी से उसे जल्दी नींद आ गयी.

अचानक अमोस ने खुद को दुबारा पानी में पाया. अब वो जगा था और पानी में अपने हाथ-पैर पटक रहा था! बोरिस व्हेल भूल चुकी थी कि उसकी पीठ पर कोई मेहमान लेटा था. वो सांस लेने पानी से बाहर निकली. वो इतनी तेज़ी से पानी से बाहर निकली कि बिचारा अमोस हवा में कलाबाजी लगाने लगा.

जब अमोस ऊंचाई से पानी में जाकर गिरा तो उसे दर्द हुआ. तकलीफ में अमोस ने बोरिस को एक मुक्का भी मारा. वो भूल गया कि उस व्हेल की कृपा के कारण ही, उसकी ज़िन्दगी बची थी. उसके बाद जब कभी भी बोरिस सांस लेने के लिए पानी से बाहर निकलती वो उससे पहले अमोस की इजाज़त लेती, और उसे पहले से बता देती. इस तरह उनकी यात्रा ठीक-ठाक चलती रही.

कभी वे तेज़ गति से तैरते, कभी बहुत आराम से, कभी सोने के लिए रुकते, और बातचीत करते. उन्हें अमोस के घर पहुँचने में कोई एक हफ्ते का समय लगा. उस बीच, दोनों एक-दूसरे की प्रशंसा और आदर करने लगे. बोरिस को चूहे की धीमी आवाज़, उसके पंजों की रगड़, और जीवन के प्रति उसका जिंदादिल रवैया पसंद आया. अमोस को व्हेल का विशालकाय शरीर, उसकी शक्ति, उसकी भारी आवाज़ और गहरी मित्रता पसंद आई.

फिर उन दोनों में पक्की दोस्ती हो गई. उन्होंने एक दूसरे को अपनी ज़िन्दगी के बारे में, और अपने सपनों के बारे में बताया. उन्होंने एक-दूसरे को अपने जीवन के रहस्यों के बारे में बताया. व्हेल ने ज़मीन का जीवन कभी अनुभव नहीं किया था. वो उसके बारे में जानने को बहुत इच्छुक थी. जब व्हेल ने समुद्र की गहराईयों के किस्से, चूहे को सुनाए तो अमोस को वो बेहद दिलचस्प लगे. कभी-कभी अमोस व्हेल की पीठ पर आगे-पीछे दौड़ लगाता और वर्जिश करता था. जब उसे भूख लगती तो वो समुद्री सूक्ष्म जीव “प्लैंकटन” खाता था. उसे समुद्री खारा पानी अच्छा नहीं लगता था और उसे ज़मीन के मीठे पानी की बहुत याद सताती थी.

फिर अलविदा कहने का समय आया. वे समुद्र के तट पर पहुंचे. “काश, हम आजीवन मित्र बने रह सकते,” बोरिस ने कहा. “हम लोग ज़िन्दगी भर दोस्त रहेंगे, पर हम साथ नहीं रह पाएंगे. तुम ज़मीन पर रहना और मैं समुद्र में रहूंगी. वैसे मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी.”

“तुम आश्वस्त रहो, मैं भी तुम्हें ज़िन्दगी में कभी नहीं भूलूंगा,” अमोस ने कहा. “मेरी ज़िन्दगी बचाने के लिए, मैं हमेशा तुम्हारा आभारी रहूँगा. अगर तुम्हें कभी भी मेरी मदद की ज़रुरत हो तो मैं हमेशा वहां हाज़िर रहूँगा!” वो भला उस भीमकाय व्हेल की क्या मदद कर सकता था? यह अमोस को अच्छी तरह पता था. फिर भी उसकी नियत अच्छी थी और वो बोरिस की सहायता करना चाहता था.

व्हेल अमोस को समुद्र के तट तक तो नहीं ले जा सकी. तट से कुछ दूरी पर अमोस, व्हेल की पीठ से कूदा और फिर वो तैरता हुआ किनारे की रेत तक पहुंचा.

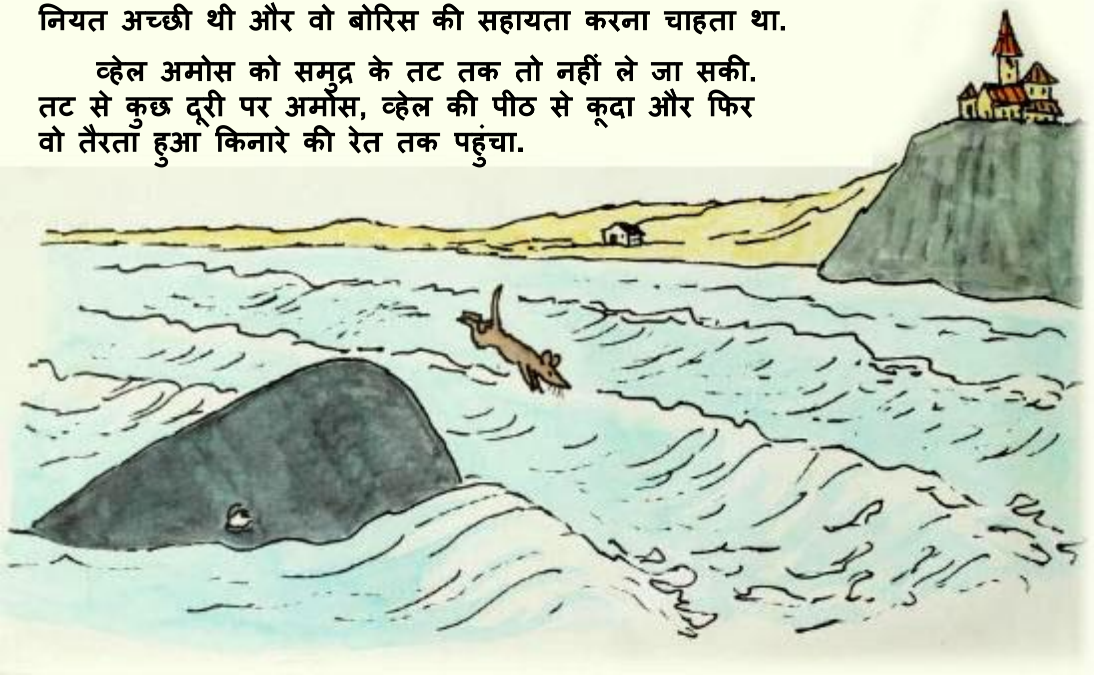

फिर एक टीले पर खड़े होकर अमोस ने बोरिस को दो बार हवा में पानी का फव्वारा छोड़ते हुए देखा और फिर उसे आँखों से ओझल होते हुए देखा.

बोरिस खुद अपने आप पर हंसी. “वो छोटा सा चूहा भला मेरी क्या मदद करेगा? वो बहुत छोटा है, पर दिल का अच्छा है. मुझे उससे प्यार है और उसकी याद मुझे बहुत सताएगी.”

उसके बाद बोरिस, व्हेलों की मीटिंग के लिए आइवरी कोस्ट गई. बाद में वो व्हेलों की दिनचर्या में व्यस्त हो गई. अमोस एक चूहे की ज़िन्दगी बसर करने वापिस चला गया. दोनों खुश थे.

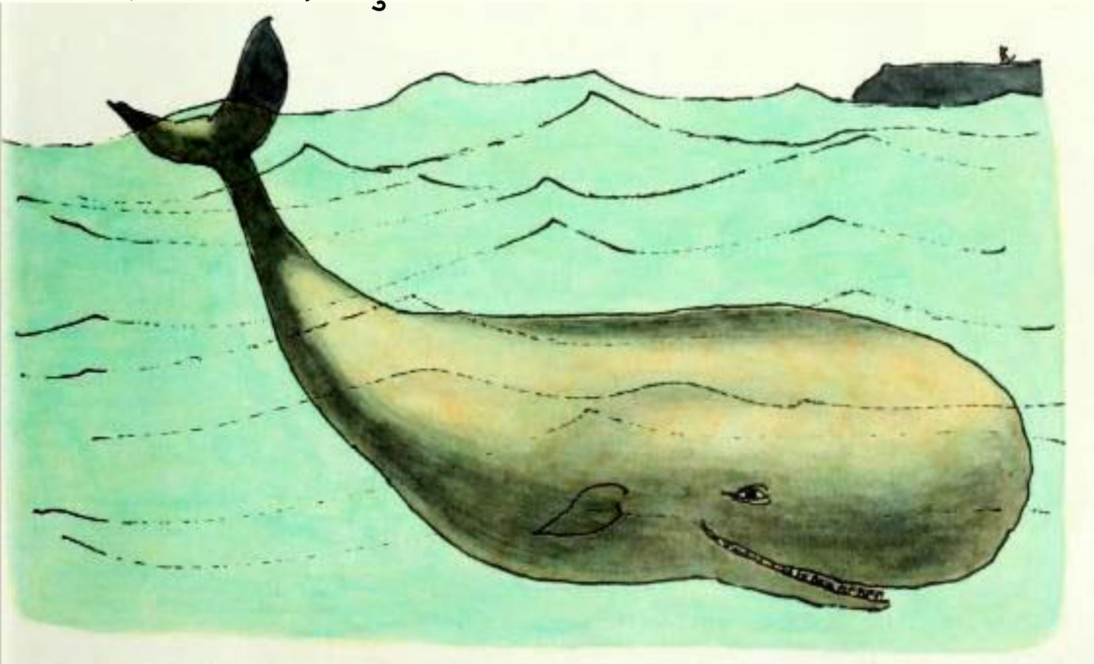

इस घटना को घटे, कई साल बीत गए. अमोस अब एक युवा चूहा नहीं रहा था, ओर बोरिस भी एक युवा व्हेल नहीं थी. तब एक भयंकर तूफ़ान आया.

पूरी शताब्दी में ऐसा भयानक तूफ़ान – हरिकेन *"येटा"* पहले कभी नहीं आया था. तूफ़ान के कारण बोरिस व्हेल को शक्तिशाली लहरों ने, समुद्र के तट पर लाकर पटक दिया. यह वही तट था जहाँ पर अमोस रहता था.

जब हरिकेन *"येटा"* ख़त्म हुआ और कुछ शांति हुई तब बोरिस व्हेल, तट पर सूखी रेत में पड़ी थी और पानी में वापिस लौटने का भरसक प्रयास कर रही थी. धीरे-धीरे उसके शरीर की नमी, धूप में सूख रही थी. वो समुद्र में लौटने को तरस रही थी. तभी इत्तिफाक से अमोस तट पर टहलता हुआ आया. वो हरिकेन *"येटा"* द्वारा किए नुकसान का जायजा लेने आया था.

दोनों साथी बरसों बाद मिले थे, पर वे एक झलक में, एक-दूसरे को पहचान गए. इस गंभीर घड़ी में दोनों दोस्तों को मिलकर कैसा लगा होगा, इसे बयां करना मुश्किल है. अमोस, बोरिस की ओर दौड़ा. बोरिस सिर्फ अमोस को देखती रही. बेचारी व्हेल, उसके अलावा भला कर भी क्या सकती थी.

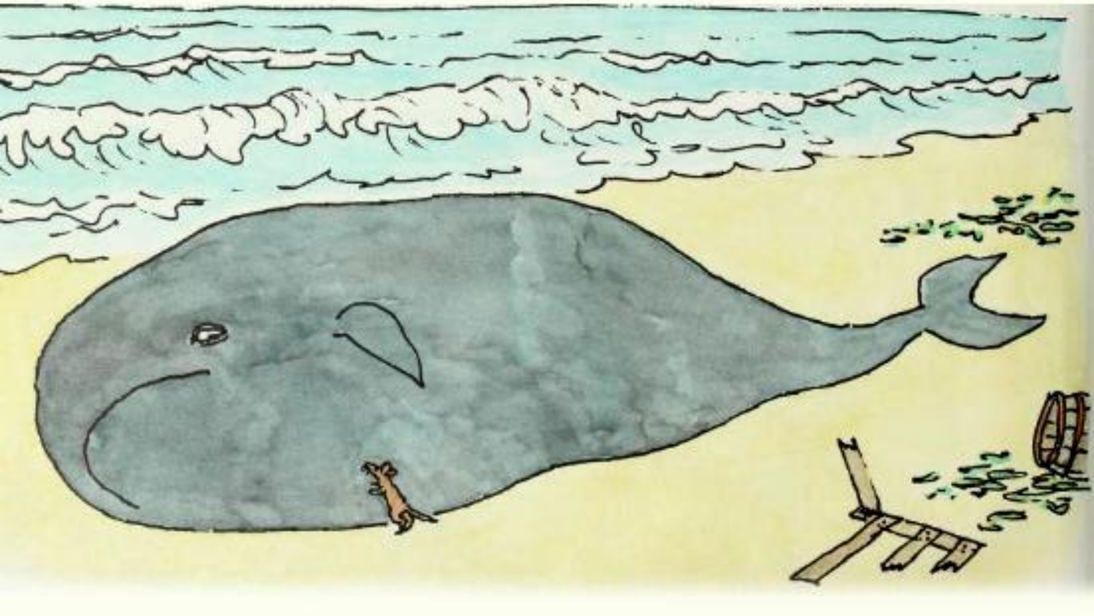

“अमोस, मेरी मदद करो,” पहाड़ जैसी विशाल व्हेल ने उस छोटे से चूहे से विनती की. “अगर मैं जल्दी से पानी में वापिस नहीं गई तो मैं निश्चित तौर पर मर जाऊंगी.” अमोस ने बोरिस को बहुत दया की दृष्टि से देखा. उसे स्थिति की गंभीरता का तुरंत एहसास हुआ. हालात से निबटने के लिए उसे तुरंत कुछ करना होगा. पर वो क्या करे? वो सोचने लगा. फिर कुछ देर में वो वहां से गायब हो गया.

“मुझे लगता है कि वो मेरी कुछ मदद नहीं कर पाएगा,” बोरिस व्हेल ने खुद से कहा. “उसकी नियत ठीक है, पर वो छोटा सा प्राणी भला क्या कर पाएगा?”

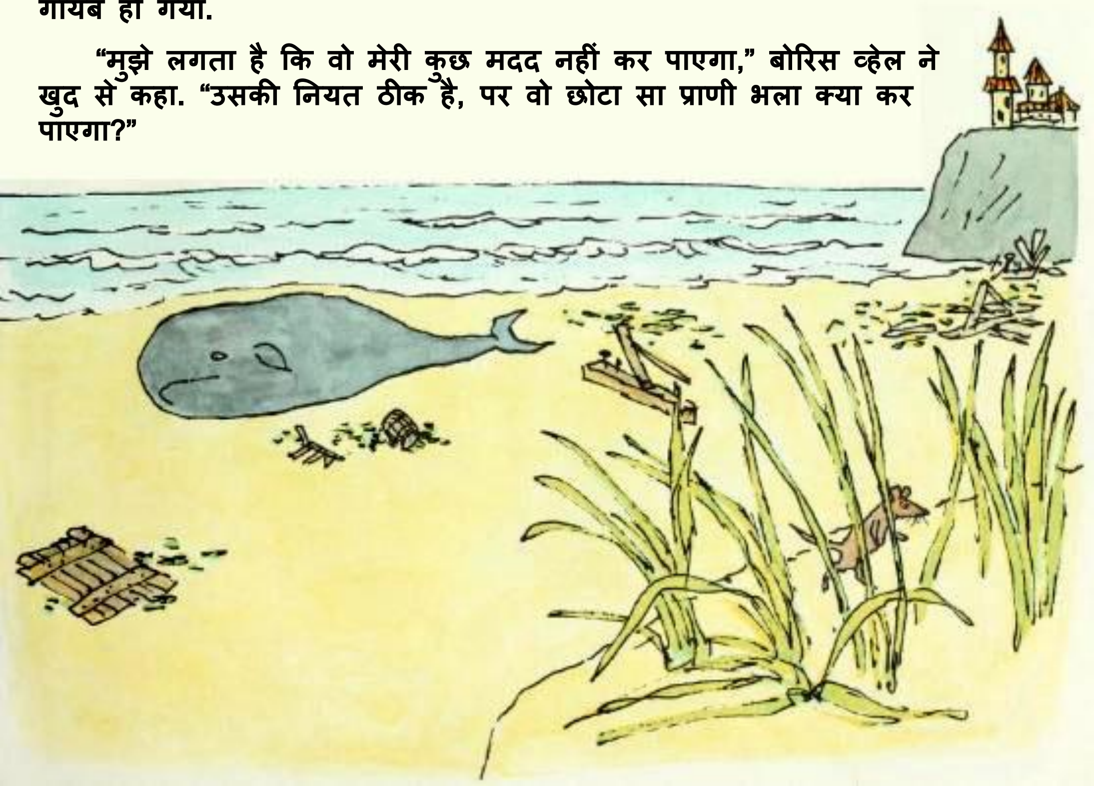

कभी जब अमोस समुद्र में गिरा था तो उसके ज़हन में भी इसी तरह के विचार घूमे थे. उसी तरह के विचार अब बोरिस के दिमाग में भी घूम रहे थे. बोरिस को अपना अंत अब करीब लगने लगा था. जब बोरिस मरने की तैयारी कर रही थी तभी अमोस दो बड़े, लहीम-शहीम हाथियों के साथ दौड़ा हुआ वहां आया.

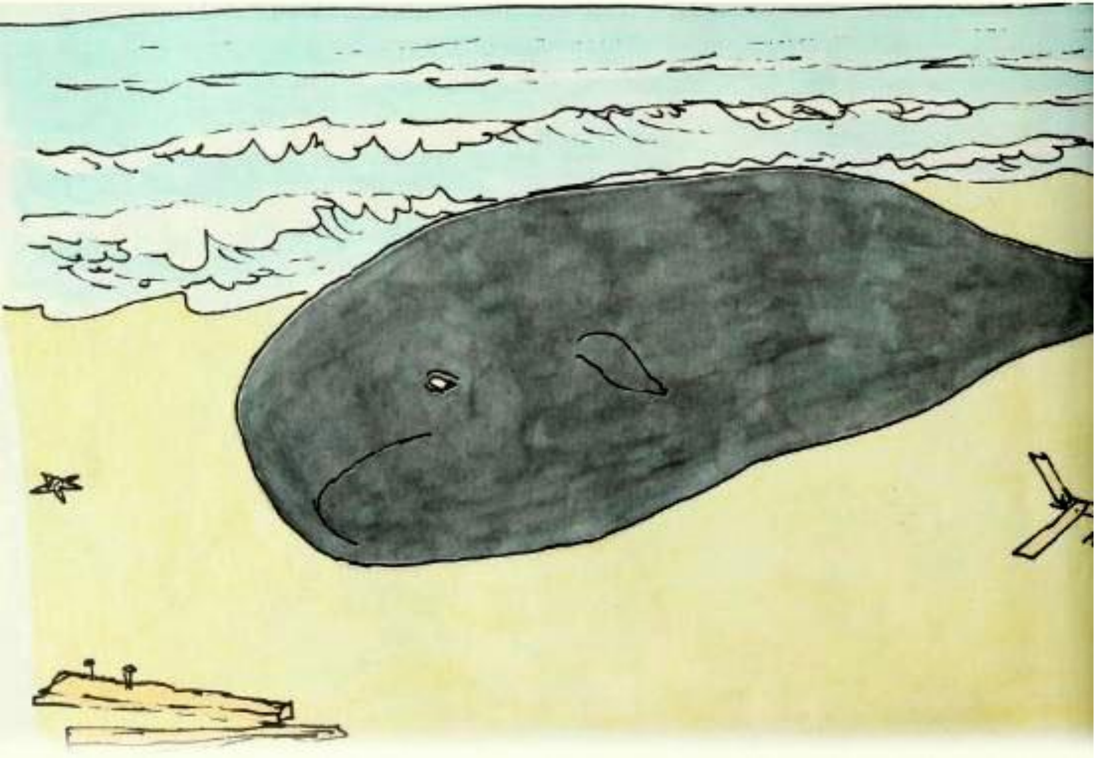

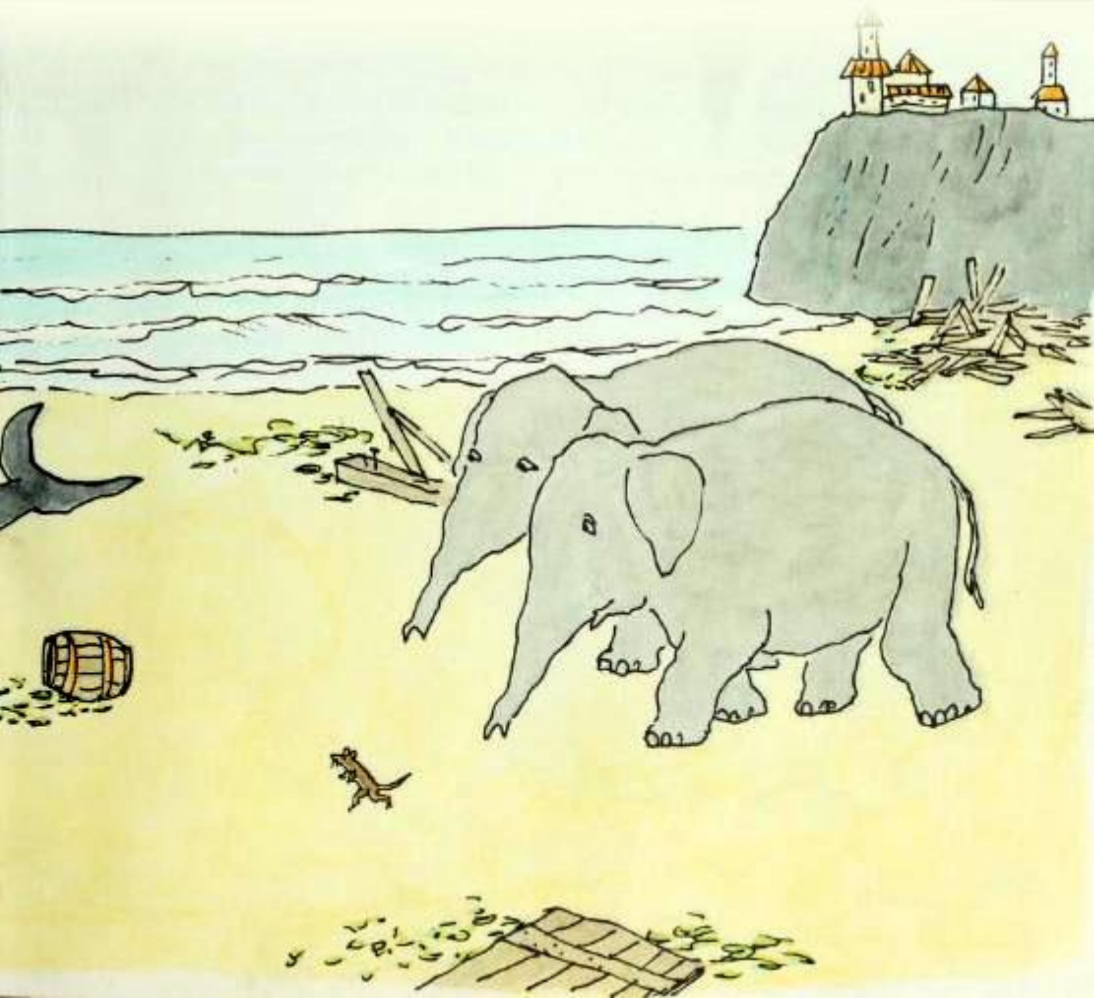

उन हाथियों ने समय नष्ट न करते हुए व्हेल को एक-साथ समुद्र की ओर ढकेलना शुरू किया. व्हेल का शरीर हिला ओर उसने एक पटकी खाई. अब उसके शरीर पर रेत चिपकी थी. पर धीरे-धीरे व्हेल लुढ़कते हुए समुद्र के पानी में जाकर गिरी. अमोस एक हाथी के सर पर खड़े होकर आर्डर दे रहा था, पर अब उसकी बात कोई नहीं सुन रहा था.

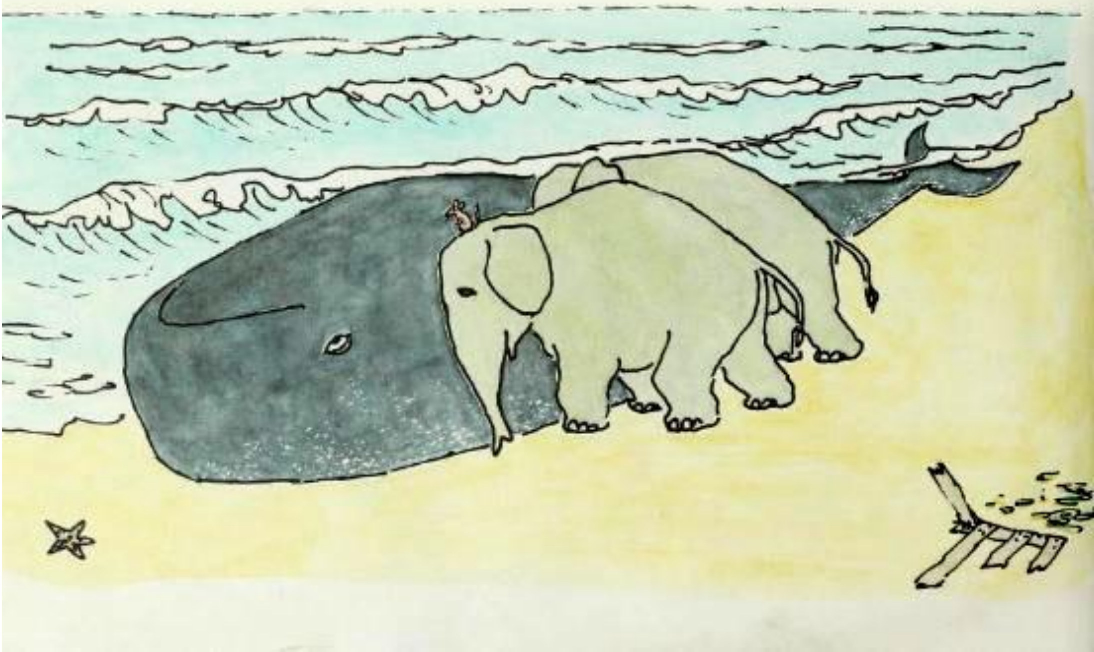

चाँद मिनटों में बोरिस, समुद्र के पानी में थी और लहरें उसके शरीर का रेत धो रही थीं. उसे अपने शरीर पर दुबारा पानी महसूस करते हुए बहुत अच्छा लग रहा था. “समुद्र में वापिस आने पर मुझे कितना अच्छा लग रहा है,” बोरिस ने सोचा. “ख़ासकर एक व्हेल को.” कुछ ही देर में बोरिस आराम से समुद्र के गहरे पानी में तैर रही थी.

बोरिस ने फिर अमोस को देखा जो अभी भी हाथी के सर पर खड़ा था. उसे देखकर विशाल व्हेल की आँखों से प्यार के आंसू बहने लगे. उस छोटे चूहे की आँखें भी नम थीं. “अलविदा मेरे प्यारे दोस्त,” अमोस ने अपनी धीमी आवाज़ में कहा. “अलविदा मेरे पक्के दोस्त,” बोरिस ने कहा और फिर वो समुद्र की गहराई में विलीन हो गई. उन्हें पता था कि शायद अब इस ज़िन्दगी में वे दुबारा नहीं मिलेंगे. पर वे एक-दूसरे को कभी भूलना नहीं चाहते थे.

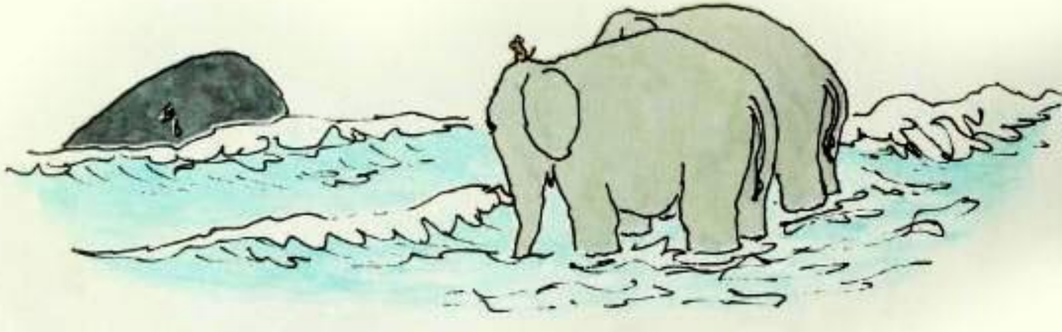

एक चूहे और व्हेल की दोस्ती की अमर कथा